Dainik Bhaskar (Indore), 14th July 2024, Page- 29

दीक्षांत समारोह | आईआईटी में 673 को मिली डिग्री, 14 गोल्ड-सिल्वर मेडल दिए गए

महू मिलिट्री कॉलेज व नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के साथ शुरू होगा कोर्स

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

आईआईटी इंदौर के इतिहास की सबसे बड़ी बैच का दीक्षांत समारोह शनिवार को हुआ। इस दौरान 673 स्टूडेंट्स को डिग्री प्रदान की गई। पहली बार आईआईटी और आईआईएम द्वारा संयुक्त रूप से चलाए गए डिग्री प्रोग्राम एमएस डीएसएम के भी 84 स्टूडेंट्स को डिग्री दी गई। साथ ही 14 गोल्ड और सिल्वर मेडल भी दिए गए। आईआईटी के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने संस्था की रैंकिंग, एकेडमिक, रिसर्च, प्लेसमेंट और एंटरप्रेन्योरशिप को लेकर जानकारी दी। मुख्य अतिथि डीडी डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी कामत थे। अध्यक्षता आईआईटी इंदौर के बोर्ड ऑफ़ गवर्नर के अध्यक्ष डॉ. के सिवन ने की। विशेष अतिथि के रूप आईआईएम इंदौर निदेशक प्रो. हिमांशु राय थे।

सबसे ज्यादा 334 बीटेक के

समारोह में जिन्हें डिग्री दी गई उसमें 334 बीटेक के स्टूडेंट्स थे वहीं एमएससी के 97, एमटेक के 54, एमएस रिसर्च के 23 और पीएचडी के कुल 81 स्टूडेंट्स शामिल हुए।

सैनिकों के जूतों से बन सकेगी बिजली, यंग साइंटिस्ट लैब बनाई

डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ समीर वी कामत ने कहा कि इंदौर में डिफेंस रिसर्च की अपार संभावनाएं हैं। यहां आईआईटी, आईआईएम, आरआर कैट और देवी अहिल्या विवि है जहां से बहुत सारे नए आइडियाज निकलकर आ सकते हैं। उन्होंने बताया एक प्रोजेक्ट ऐसा भी है जिसमें सैनिकों से जूतों से ऊर्जा पैदाकर कैपेसीटर में डाली जाएगी। इसके लिए ट्राई बो इलेक्ट्रिक स्टेटिक एनर्जी के सिद्धांत का इस्तेमाल किया जा रहा है। आईआईटी के स्टूडेंट्स ने ऐसे 5 जोड़ जूते भी बना लिए हैं जिनसे ऐसी एनर्जी बनाई जा सकती है और ये कई चीजों को पॉवर देने के लिए काम आ सकती है। डीआरडीओ युवाओं की इनोवेशन शक्ति पहचानता है जिसके लिए एक यंग साइंटिस्ट लैब बनाई है जिसमें 35 वर्ष आयु से कम के ही वैज्ञानिक हैं।

2800 स्टूडेंट्स पढ़ रहे, इंडस्ट्री के साथ भी प्रोग्राम ला रहे

प्रो. सुहास जोशी ने कहा कि आईआईटी में वर्तमान में 2800 स्टूडेंट्स हैं। अब हम एम्स भोपाल, आरआर कैट, आईआईएम के साथ ही इंडस्ट्री के लिए भी प्रोग्राम ला रहे हैं। उन्होंने बताया कि जल्द ही आईआईटी इंदौर मिलिट्री कॉलेज ऑफ़ टेलीकम्यूनिकेशन (महू) और नेशनल लॉ इंस्टिट्यूट यूनिवर्सिटी भोपाल के साथ भी प्रोग्राम ला रहा है।

प्रिंटिंग प्रेस में काम करने वाले पिता की बेटी ने पाया गोल्ड और सिल्वर मेडल

● **कृशांगी कश्यप-** 'मैं असम से हूं और मेरे पिताजी एक प्रिंटिंग प्रेस में काम करते थे। मेरे शहर में और आसपास किसी को उम्मीद नहीं थी कि वो आईआईटी जैसी संस्था में जाकर पढ़ सकते हैं। मैंने यहां इसरो के चंद्रयान 2 के डाटा से चांद के ऊपर के पत्थरों का अध्ययन किया और उसके हमेशा अन्धकार में रहने वाले हिस्सों पर पानी और बर्फ होने के साक्ष्य ढूंढें।'

जीवित माइक्रोब्स से प्लास्टिक बनाने पर शोध किया, पाया गोल्ड मेडल

● **कंचन समाधिया-** 'मैं ग्वालियर से हूं और मैंने आईआईटी के बायोसाइंस और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग से पीएचडी की है जिसमें मैंने ऐसे कुछ वायरस और बैक्टीरिया इंदौर के आसपास के पानी से निकाले हैं जिसकी मदद से प्लास्टिक का पर्याय बनाया जा सकता है। इसकी लैब में जांच पूरी हो चुकी है। मैं इसे कमर्शियल स्तर प्रयोग करने पर काम कर रही हूं।'